सोहराई व कोहबर कला शैलियां विषय पर 6 दिवसीय चित्रकला कार्यशाला

रांची | महिला महाविद्यालय के फैशन डिजाइनिंग विभाग में सोहराई व कोहबर झारखंड की पारंपरिक कला शैलियां विषय पर छह दिवसीय चित्रकला कार्यशाला का आयोजन एक मई से किया गया। कार्यशाला इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय केंद्र रांची व रांची महिला महाविद्यालय के फैशन डिजाइनिंग विभाग की संयुक्त पहल है। जिसका उद्देश्य झारखंड की समृद्ध लोक कलाओं को नई पीढ़ी से जोड़ना है। मुख्य अतिथि के रूप में शामिल पद्मश्री मुकुंद नायक ने कहा कि सोहराई व कोहबर जैसी पारंपरिक चित्रकला शैलियां केवल सजावटी माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये आदिवासी समाज की जीवनशैली हैं।

सोहराई व कोहबर कला आदिवासी समाज की जीवनशैली

जागरण संवाददाता, रांची: रांची महिला कालेज के फैशन डिजाइनिंग विभाग में सात मई तक चलनेवाली 'सोहराई और कोहबर : झारखंड की पारंपरिक कला शैलियां' विषय पर छह दिवसीय चित्रकला कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और रांची महिला कालेज के फैशन डिजाइनिंग विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यक्रम के बारे में रांची केंद्र के निदेशक डा. कुमार संजय झा ने विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पारंपरिक लोक कलाओं जैसे मिथिला, गोंड, मधुबनी और वर्ली चित्रकला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुकी हैं। वैसा समर्पण झारखंड की अद्वितीय पारंपरिक कलाओं, सोहराई और कोहबर के संदर्भ में अब तक नहीं दिखाई देता। कार्यशाला का शुभारंभ पद्मश्री मुकुंद नायक की उपस्थिति में हुआ। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सोहराई और कोहबर जैसी पारंपरिक चित्रकला शैलियां केवल सजावटी माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये आदिवासी समाज की जीवनशैली, सांस्कृतिक चेतना और परंपरागत रीति-रिवाजों की जीवंत अभिव्यक्ति हैं।

छात्रों को दिया गया सोहराई व कोहबर चित्रकला का प्रशिक्षण

आरयू के फैशन डिजाइनिंग विभाग में कार्यशाला में उपस्थित लोग • जागरण

जासं, रांची : रांची महिला कालेज के फैशन डिजाइनिंग विभाग और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय केंद के सहयोग से सात दिवसीय सोहराई और कोहबर चित्रकला का आयोजन किया गया है। इस कार्यशाला का उद्घाटन पद्मश्री डा. मुकुंद नायक,रांची महिला कालेज की प्राचार्य डा. सुप्रिया और क्षेत्रीय निर्देशक कुमार संजय झा ने किया। छात्राओं को सोहराई और कोहबर कला जुड़ी जानकारी दी गई। किस तरह के रंगों का प्रयोग किया जाता है, इसकी तकनीकी जानकारी दी गई । इन सोहराई और कोहबर कलाकृतियों को फ्री हैंड बनाए जाने का प्रशिक्षण दिया गया। छात्राओं को चित्रकला में उपयोग किए जाने वाले जानवरों, वनस्पतियों और फूलों की आकृतियों की भी जानकारी दी। चित्रकला में उपयोग किए जाने वाले मूल रंगों और उन्हें कैसे बनाया जाए। साथी ही छात्राओं को बनाये गए चित्र में रंग भरना शिखाया गया। इस कार्यशाला का समापन पद्मश्री मधु मंसूरी हंसमुख के पर्यावरण संरक्षण से संबंधित गीत से हुई। सभी प्रतिभागी छात्राओं को प्रमाणपत्र वितरण किया। इस कार्यशाला में फैशन डिजाइनिंग और गृह विज्ञान की छात्राएं हिस्सा ले रही हैं। चित्रकला की प्रशिक्षण हजारीबाग से आए कारीगरों द्वारा दिया जा रहा हैं।

सोहराय-कोहबर का प्रशिक्षण मिला

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची और रांची वीमेंस कॉलेज की ओर से झारखंड की सोहराय और कोहबर कला पर आधारित सात दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को कॉलेज के साइंस ब्लॉक परिसर में हुआ।

इसमें फैशन डिजाइनिंग विभाग और गृह विज्ञान विभाग के स्नातक व स्नातकोत्तर छात्राओं ने भाग लिया। इस कार्यशाला में हजारीबाग, जोराखाट गांव से आए चार लोक कलाकारों ने छात्राओं को सोहराय और कोहबर कला की पारंपरिक तकनीकों व सांस्कृतिक महत्व का प्रशिक्षण दिया।